व्योमकेश दरवेश : संघर्ष, हर्ष और संघर्ष की कहानी
(फिर बैतलवा उसी डार पर)

अवधेश कुमार

'व्योमकेश दरवेश' नाम ही अपनी विशिष्टता को समेटे हुए है। जिसके नाम मात्र से ही हृदय में कौतुहल उमड़ने लगता है। 'व्योमकेश दरवेश' आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के जीवन का प्रामाणिक व संस्मरणात्मक वृतान्त है। इसमें आचार्य जी के जन्म से लेकर महाप्रस्थान तक की जीवन–यात्रा को उनके ही आत्मीय शिष्य पंडित विश्वनाथ त्रिपाठी जी ने एक अविस्मरणीय ग्रंथ का रूप प्रदान किया है, जिसका संघर्षमयी एवं आदर्शवादी योगदान हिन्दी साहित्य जगत में सराहनीय है। इस कृति में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के जन्म, शिक्षा, शिक्षकीय जीवन का निर्वाह तथा उनके व्यक्तित्व का विवरण स्मृतियों के आधार पर रेखांकित किया गया है। रचनाकार विश्वनाथ त्रिपाठी ने 'व्योमकेश दरवेश' के माध्यम से संस्कृत और हिन्दी के प्रकांड विद्वान, ज्योतिषाचार्य, साहित्यकार, इतिहासकार, उपन्यासकार, निबन्धकार, कहानीकार एवं मर्म आलोचक आचार्य पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी के जीवन की समस्त गतविधियों व्यक्तिगत, व्यावहारिक, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, कूटनीतिक, शिष्यवत्, मित्रवत्, गुरुवत्, कृतित्व, गुण–दोष तथा स्वयं के वैचारिक सिद्धान्तों पर प्रकाश डालकर उसे प्रामाणिक व रचनात्मक ढंग से उद्धृत किया है।